धर्म का ही एक नाम "विज्ञान"

मानव समाज में उत्पन्न होने वाला तूफान प्रकृति के अंदर एक ऐसा तूफान खडा करता है, जो अपने निवाश के साथ प्रकृति का भी विनाश कर देता है। यह पूर्ण सत्य विज्ञान है, यदि कोई ऐसा नही मानता है तो यह उसका भ्रम है, प्रकृति का नहीं। प्रकृति की हर घटना धर्म है जिसे मानव समाज सिद्ध करके देख सकता है। हर घटना का परिणाम जो स्वतः होता है उसे सिद्ध करके देख लिया जाता है, उसे **विज्ञान** कहते हैं। मानव समाज के अधिकांश लोग हर विषय पर विश्वास करते हैं लेकिन सत्य पर विश्वास नहीं करते हैं। आप खुद करके देखिए।

जो घटना घटती है उसका परिणाम जरूर होता है, यही प्रकृति का विज्ञान है जो प्रकृति का धर्म है। जो कारण घटना पैदा करता है वही प्रकृति का नियम होता है, जिसे विज्ञान कहा जाता है। मानव समाज तत्व मिलाकर उसका उपकरण तैयार करता है जो मानव समाज के असम्भव कार्य को असम्भव कार्य को सम्भव बना देता है, यदि विज्ञान इसे मानता है तो उसे पूरा अपना निर्माण भी प्रकृति का विज्ञान मानना पडेगा। मानव समाज जो भी विज्ञान देखता है उसे पूरा करने से पहले प्रकृति में वह चीज देखता है। यदि आप किसी विषय मे अच्छे विचार छोडते है तो वह भी आपके प्रति अच्छे विचार ही छोडेगा, यह भी एक विज्ञान है क्योंकि पहला जो अच्छा विचार बनाता है उसकी इसी क्रिया से स्वाभाविक रूप से अच्छी भावना छोड़ता है जो विज्ञान है, जिसे धर्म मानते है।

पूरा ब्रहमांड एक गुब्बारे की तरह है, जिस प्रकार गुब्बारे के अंदर हवा भरी होती है उसी प्रकार ब्रहमाण्ड के अदर गैस भरी होती है। इस ब्रहमाण्ड के गोले के बाहर की भाग जल से भरा होता है, कोई जगह खाली नहीं होती है। ब्रहमाण्ड के अंदर कई ग्रह हैं जिस ग्रह पर प्रकृति हर सुविधा उपलब्ध कराती है जहा जीव का विकास होती है। यह प्रकिया सूर्यदेव के प्रकाश से सम्भव हो पाती है। जब सूर्यदेव का प्रकाश ततपव पर पडता है तो उसका असत्य जलकर सत्य प्रकाशित होता है, जिससे सृष्टि संचालित होती है। सूर्यदेव सत्य का भण्डार होता है, जहां से सत्य निकलकर पूरी सृष्टि में पहुचता है। सृष्टि में जिस प्रवृत्ति का ततव होता है, उसी प्रकार की वस्तु का निर्माण होता है। सत्यदेव से प्रकृति को सत्य मिलता है और प्रकृति से निकलने वाला सत्य फिर सत्यदेव मे जाकर मिल जाता है। जिस प्रकार पृथ्वी पर व्यक्ति आसमान की तरफ देखकर कहता है कि ऊपर वाला जाने। वैसे ही अन्य ग्रह के जीव प्राणी को पृथ्वी के लोग ऊपर वाले [illegible] जीव प्राणी अन्य ग्रह पर भी होते हैं जैसे पृथ्वी पर नही। इस प्रकार पूरी सृष्टि एक विज्ञान है जिसे समय कहा जा सकता है। इसे काई रोक नहीं सकता है है। पूरी सृष्टि स्वाभाविक चुम्बक से

यदि आप किसी को गाली देंगे तो वह भी स्वाभाविक रूप से आपको गाली देगा। यदि आपके बराबर है तो सामने, नहीं तो मन में गाली देगा। पर दोनों का परिणाम अच्छा नहीं होगा। माहौल स्वाभाविक रूप से गर्म हो जाता है, लड़ाई तक हो जाती है परिणामस्वरूप प्रकृति गर्म होगी क्योंकि गर्म भावना छोड़ी जा रही है। सभी को हानि होती है। यदि वह विज्ञान नहीं है तो क्यों नहीं कोई इसे रोक लेता?